

## युवा प्रभाग-दिव्य दर्पण ग्रुप अक्टूबर 2011 मास के पुरुषार्थ की प्वाइंट्स

### अक्टूबर मास का चार्ट:

- लक्ष्य – समाधानस्वरूप बन निर्विघ्न स्थिति द्वारा यज्ञ रक्षक बनना।

यज्ञ रक्षक वही आत्माएं बन सकती हैं जिनकी स्थिति निर्विघ्न रहेती है। समास्याएं तो संगम पर अन्तिम श्वास तक आनी ही है क्योंकि हिसाब-किताब चुक्तु करने का समय चल रहा है। इसलिए समास्याएं जीवन में आये ही नहीं यह सोचना ही गलत है। हम त्रिकाल ज्ञानी आत्माओं को कभी भी समास्याओं के कारण के पीछे समय व्यर्थ नहीं करना चाहिए, केवल समाधान ही सोचना चाहिए। प्यारे बाबा ने हम बच्चों को हर समास्या का समाधान दिया है, हमें केवल अपने स्मृति की स्वीच ऑन करनी है।

तो आओ, हम सभी समाधान स्वरूप बनकर अपनी स्थिति को निर्विघ्न बनाएं और यज्ञ रक्षक बनें।

### विधि :

सप्ताह	दिव्य दर्पण की स्थिति
पहला	साक्षी दृष्टा स्थिति
दूसरा	प्रसन्नचित्त स्थिति
तीसरा	कल्याणकारी स्थिति
चौथा	निर्विघ्न स्थिति

1. साक्षी दृष्टा स्थिति: कोई भी समास्या जब आये तब यह समझेंगे कि यह मेरी समास्या है, मुझे ही उसका सामना करना पड़ेगा तो हम कभी भी समाधान कर नहीं सकेंगे। साक्षी दृष्टा स्थिति में स्थित हो जायेंगे तब ही हम उस समास्या का समाधान कर सकेंगे। जब दूसरों की समास्या में हमें राय देनी होती है तो हम बहुत सुन्दर युक्तियां बता सकते हैं पर स्वयं की समास्या में नहीं। इसलिए अगर साक्षी दृष्टा बनके समास्या को देखेंगे तो हम श्रीमत का पालन पूर्ण रूप से कर सकेंगे। श्रीमत ही हर समास्या का समाधान है। कितने % हम साक्षी दृष्टा की स्थिति में स्थित होकर समाधान स्वरूप बनें, यह लिखना है।
2. प्रसन्नचित्त स्थिति: कोई भी समास्या आये तब मन में क्यों, क्या, कैसे, प्रश्न नहीं उठने चाहिए। प्रश्न प्रसन्न रहेने नहीं देते। प्रश्नों के चक्रव्युह में न फँसकर हम ड्रामा का हर सीन प्रसन्न होकर स्वीकार करें। हमारे प्रश्न हमें ही परेशान करते हैं, इसलिए सदैव हम अपनी शान में रहे और प्रसन्न रहें। कितने % में हम प्रसन्न रह सके, यह लिखना है।
3. कल्याणकारी स्थिति: हम परमात्म बच्चों का हर परिस्थिति में कल्याण ही कल्याण है। कल्याणकारी युग में, कल्याणकारी बाप के बच्चों का कभी अकल्याण हो ही नहीं सकता। हर परिस्थिति में कल्याण समाया हुआ है और जो आत्मा इस परिस्थिति के निर्माण के लिए निमित्त बनी है उसके प्रति भी कल्याण का ही भाव रखें। कितने % में हम कल्याणकारी स्थिति में रहे, यह लिखना है।
4. निर्विघ्न स्थिति: मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माओं के सामने कोई विघ्न आ ही नहीं सकता। जिनके साथ स्वयं भगवान है, जो आत्मा परमात्म छत्रछाया में रहती है उन आत्माओं को विघ्न छू भी नहीं सकता। विघ्न लगान बढ़ाने का साधन है। हम निर्विघ्न आत्माएं सर्व आत्माओं को विघ्न मुक्त करने वाले, स्वयं किसी विघ्न से कैसे हार खा सकते हैं? कितने % हम निर्विघ्न रहें, यह लिखना है।

❖ फ्रेमबुक में ऊपर चार पंक्तियों में निम्नलिखित बिन्दु लिखकर उसका परिणाम प्रतिदिन रात को सोने से पहले लिखें:

- |  |                                 |                            |
|--|---------------------------------|----------------------------|
| 1. अमृतवेला - 4.00 से 4.45, बाबा के कमरे में | 2. मुरली क्लास - क्लास में सुनी | 3. ट्रैफिक कंट्रोल - 5     |
| 4. स्वमान की स्मृति - बहुत अच्छी             | 5. अव्यक्त मुरली पढ़ी? - हाँ जा | 6. नुमाशाम का योग - हाँ जी |
| 7. स्थिति - 60 %                             | 8. गुड नाइट - 10.00             |                            |

❖ फ्रेम बुक में आज की मुरली के पश्चात् कम से कम 21 बार स्वमान लिखना है या चिन्तन कर 10 प्वाइंटस लिखनी है एवं कोई अनुभव हुआ हो तो वह ज़रूर लिखें।

❖ स्वमान:

1. मैं आत्मा साक्षी दृष्टा हूँ।	16. मैं आत्मा कल्याणकारी हूँ।
2. मैं आत्मा साक्षी बन पाई बजानेवाली हूँ।	17. मुझ आत्मा का हर बात में कल्याण है।
3. मैं आत्मा सर्व बातों से न्यारी हूँ।	18. मैं आत्मा त्रिकालदर्शी हूँ।
4. मैं आत्मा निमित्त मात्र पाई बजाने वाली हूँ।	19. मैं आत्मा शुभ कामना रखनेवाली हूँ।
5. मैं आत्मा कमल आसनधारी हूँ।	20. मैं आत्मा क्षमाशील हूँ।
6. मैं आत्मा साक्षी की सीट पर स्थित हूँ।	21. मैं आत्मा रहमदिल हूँ।
7. मैं आत्मा स्वदर्शन चक्रधारी हूँ।	22. मैं आत्मा कल्याणकारी बाप की सन्तान हूँ।
8. मैं आत्मा स्व विश्लेषण करनेवाली हूँ।	23. मुझ आत्मा का साथी स्वयं भगवान है।
9. मैं आत्मा प्रसन्नचित्त हूँ।	24. मैं आत्मा भगवान की छत्रछाया में हूँ।
10. मैं आत्मा सदा खुश हूँ।	25. मैं आत्मा विघ्न विनाशक हूँ।
11. मैं आत्मा सन्तुष्टमणी हूँ।	26. मैं आत्मा विघ्न मुक्त हूँ।
12. मैं आत्मा फूलस्टॉप लगानेवाली हूँ।	27. मैं आत्मा विघ्नप्रूफ हूँ।
13. मैं आत्मा हर्षितमुख हूँ।	28. मैं आत्मा भगवान की भूजा हूँ।
14. मैं आत्मा खुशनुमा हूँ।	29. मैं आत्मा विघ्नजीत हूँ।
15. मैं आत्मा प्रश्नों से पार हूँ।	30. मैं आत्मा निर्विघ्न हूँ।
	31. मैं आत्मा यज्ञ रक्षक हूँ।

❖ हर मास के प्रथम सप्ताह में यह पोस्टकार्ड लिखकर महादेवनगर युवा प्रभाग कार्यालय में भेजना है।

नाम: _____	सेन्टर का नाम: _____	DiDar No: _____
अमृतवेला-75%		ट्रैफिक कंट्रोल-75%
मुरली क्लास-90%		नुमाशाम का योग-60%
स्वमान की स्मृति-55%		अव्यक्त मुरली पढ़ी?-80%
स्थिति -60%		गुड नाइट-95%
चार्ट: OK या <del>OK</del>		टीचर के हस्ताक्षर
[ _____ ]		